



खेल खेल में स्वर्गिक आनन्द मिल गया

“देसी वर्जिन गांव की चोदने का अवसर मुझे मिला जब हम काफी जने छुपम छुपाई खेल रहे थे शाम के समय. मैं जहाँ छुपा, वहां मेरे पास मेरी एक चचेरी बहन आ गई. ...”

Story By: देवेश सर (bakrichor)

Posted: Saturday, March 23rd, 2024

Categories: [पहली बार चुदाई](#)

Online version: [खेल खेल में स्वर्गिक आनन्द मिल गया](#)

खेल खेल में स्वर्गिक आनन्द मिल गया

देसी वर्जिन गांव की चोदने का अवसर मुझे मिला जब हम काफी जने छुपम छुपाई खेल रहे थे शाम के समय. मैं जहाँ छुपा, वहाँ मेरे पास मेरी एक चचेरी बहन आ गई.

अन्तर्वासना के सभी साथियों को प्यार भरा नमस्कार !

मैं देवेश उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से हाजिर हूं अपनी आप बीती लेकर !

जिंदगी में तमाम मुश्किलें आती रहती हैं और इन्हीं में से एक थी वो देसी वर्जिन गांव की लड़की ... रिश्ते में मेरी चचेरी बहन लगती थी।

शुरुआत से शुरू करते हैं।

दिन सर्दियों के थे और हम अपनी परीक्षाओं की तैयारी में जुटे हुए थे.

कुछ ही महीनों में बोर्ड के इम्तेहान शुरू होने वाले थे.

लेकिन गुरु ... हमारा खेलना जारी था।

रोज शाम को सभी चचेरे, फुफेरे भाई बहन एक साथ खेला करते थे.

इन्हीं में से एक थी मधु!

बहुत प्यारी थी.

पढ़ने में भी अच्छी थी.

अक्सर गणित के सवालों में मैं उसकी मदद करता था।

कुल मिलाकर कर बेफ़िक्री जिंदगी चल रही थी और कभी एक दूसरे के लिए दिल में सेक्स

से जुड़े ख्याल आए नहीं थे.
जब तक वो शाम नहीं आई!

दिन शनिवार का था और अगले दिन स्कूल नहीं जाना था.
ना ही कोचिंग की कोई टेंशन थी.

इसलिए लगभग तीन बजे हम सब भाई बहनों ने मिलकर छुपम छुपाई खेलना शुरू किया।

अब जिसने भी गांव में अपना समय गुजारा होगा, उसे पता होगा कि यह वो खेल होता है जिसमें मजा बहुत आता है.

और शायद सेक्स की पहल भी यहीं से शुरू होती है।

बहरहाल गांव के मकान के दो हिस्से थे जिनके बीच से लगभग दस फीट का रास्ता बगीचे की तरफ निकलता था.

एक में पूरा परिवार रहता था तो वहीं दूसरा हिस्सा गोशाला और अनाज रखने के काम आता था.

वहीं बगीचे में पुआल का ढेर लगाया गया था.

मतलब कुल मिलाकर छिपने की जगहें भरपूर थी।

मैंने छुपने के लिए गोशाला वाले हिस्से का रुख किया और अनाज वाले कमरे में जा छिपा जहां ड्रमों में अनाज और फर्श पर भूसा भरा हुआ था.

छिपने के लिए दरवाजे के दोनों तरफ करीब तीन तीन फीट की जगह थी और वहां पर हमेशा जलने वाला बल्ब बुझा हुआ था।

मधु भी मेरे पीछे पीछे आ गई और जिस तरफ मैं छुपा था वहीं आकर खड़ी हो गई।

अब तक शायद हम दोनों ने एक दूसरे के बारे में ऐसा कुछ सोचा न था.

हम दोनों ही हल्का सा झुक कर दरवाजे से बाहर जिसकी बारी थी उसे देखने की कोशिश कर रहे थे.

तभी अचानक से वह सबको ढूँढते हुए गोशाला में ही आ गया.

हम दोनों ने ही अपनी पीठ दीवाल से सटाकर खुद को उसकी नज़रों में आने से बचाने की कोशिश की.

और इसी कोशिश में मेरा बायां हाथ उसकी गांड के नीचे दब गया।

अब जिन साथियों ने छुपम छुपाई खेली है, वे जानते होंगे कि इस खेल में पहले पकड़े जाना कोई नहीं चाहता.

तो हम भी उसी हालत में हिलना डुलना छोड़ कर खड़े रहे।

लगभग दो मिनट बाद पैरों की आहट ने यह जता दिया कि वह बाहर जा चुका है.

लेकिन अब मेरी नसें खिंच रहीं थीं और सांसें गहरी हो चली थी।

कुछ ऐसा ही हाल शायद मधु का भी था क्योंकि उसने भी कोई हरकत नहीं की.

करीब तीस सेकंड के बाद मैंने अपनी उंगलियों को ऊपर की तरफ उठाया जिससे मेरी उंगलियां उसकी गांड की दरार में जाने लगीं और वह कसमसा कर आगे की तरफ बढ़ गई जिससे मेरा हाथ उसकी गांड पर से हट गया।

उसने एक बार मेरी तरफ देखा और अब तक मेरे माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगी थी हालांकि ये सर्दियों के दिन थे।

उसने कुछ कहा नहीं और एक बार फिर से झुक कर आगे देखने लगी।

उसकी गांड उभर कर मेरे सामने थी.

मैंने दिवाल का सहारा लेकर एक गहरी सांस ली और अपने अन्तर्वासना पर पढ़ी गई कहानियों के आधार पर एक फैसला किया 'पहल करके देखते हैं!'

और फिर मैं उसके ऊपर से झुक कर बाहर देखने लगा कुछ इस तरह कि मेरा एक हाथ दिवाल पर लगा था, कमर उसकी गांड से टकरा रही थी, सीने पर उसका सिर महसूस हो रहा था और दूसरा हाथ उसकी कमर और चूचियों के बीच कहीं शरीर से दूर लेकिन उसके कपड़ों को महसूस करता हुआ था।

इसी तरह मैंने एक दो हल्के धक्के कुछ इस कदर लगाए कि उसे मेरा उभरता हुआ लन्ड महसूस हो.

और फिर रूक गया।

अगले एक मिनट में मैंने करीब दस बार ऐसा ही किया और जब मेरे रूकने पर उसने अपनी गांड से दो धक्के लगाए तो मेरी हिम्मत बढ़ गई.

मैंने अपनी बांहों में उसे पीछे से भर लिया.

मेरा एक हाथ उसकी कमर पर था दूसरा चूचियों पर ... कपड़ों के ऊपर से ही मैंने उसे कस कर अपने उभरे हुए लन्ड को उसकी गांड के दरार में फंसाना चाहा.

और जैसे ही मैंने उसे चूमना शुरू किया, उसने मुझे धक्का दिया ... मैंने उसे छोड़ा.

तभी अचानक से जिसकी बारी थी, वह कमरे में घुसा और उसने उसे धप्पा कर दिया।

ढूँढने वाले की बारी फिर से लगी और मैंने अपना छुपने का ठिकाना बदल दिया.

इस बार मैं बगीचे की तरफ आ गया.

हालांकि कि मुझे लग रहा था कि सब ठीक है.

लेकिन एक डर भी था क्योंकि पहली बार ऐसी स्थिति का सामना मैंने किसी था.

मेरा सारा डर उस वक्त दूर हो गया जब वह दोबारा से मेरे पीछे पीछे आ गई।

हम दोनों पुआल के ढेर और मकान की बाउंड्री वॉल के बीच एक छोटे से गड्ढे में जा छिपे.
हालांकि यह गड्ढा इतना बड़ा था कि इसमें हमारे जैसे चार लोग आराम से आ जाएं।

नीचे हरी हरी दूब थी और ऊपर से हमने पुआल डाल ली.

ऊपर से देखने में पता तो नहीं चलता ... इसके लिए तो मैं शयोर था.

लेकिन उपर पुआल होने के कारण हिलने डुलने पर सरसराहट होने लगती थी।

ऐसे में मुझे लगा कि यहां छुपना बेकार है.

लेकिन तभी उसने आहिस्ते से अपना एक पैर मेरे पैरों के बीच फंसा दिया और मुझे देखने लगी.

मैंने अपना हाथ कपड़ों के ऊपर से ही उसकी चूत पर रगड़ा.

जवाब में उसने भी मेरे लन्ड पर हाथ फेर दिया।

मैंने धीरे से उसे पास वाले अरहर के खेत में चलने के लिए पूछा.

जिस पर उसने हामी भरी.

क्योंकि हम दोनों जानते थे कि यहां पर कुछ भी और करना खतरे से खाली नहीं होगा।

जैसे ही हम उठ कर पुआल के पीछे से निकल कर बगीचे में आये, ढूढ़ने वाले ने हमें पकड़ लिया.

और मुझे लगा कि खड़े लन्ड पर धोखा शायद इसे ही कहते हैं।

लेकिन किस्मत मेहरबान थी क्योंकि हमसे पहले कोई और पकड़ा गया था जिस वजह से इस बार सबको ढूँढने की बारी हमारी नहीं थी।

मैंने राहत की सांस ली.

धीरे धीरे करके सभी लोग ढूँढ लिए गए और एक बार फिर से छुपने की बारी आई।

इस बार हम दोनों ने बिना वक्त गंवाए अरहर के खेतों का रुख किया.

अब जितने भी साथी गांव में रहे हैं, उन्हें पता होगा कि अरहर के गांव के ओयो होटल का काम करते हैं।

जैसे ही हम खेत के बीच में पहुंचे, मैंने नीचे बैठ कर एक बार चारों तरफ देखा ताकि कोई बैठा हो तो हमें पता चल जाए.

लेकिन खेत में कोई नहीं था.

इतने में मधु ने मुझे धक्का देकर नीचे गिरा दिया और मेरे ऊपर बैठ गई.

बैठ क्या ... वह तो लेट ही गई।

उस देसी वर्जिन की चूचियां मेरे सीने पर दबी हुई थी और गांड मेरी कमर पर थी जिसमें मेरा लन्ड कपड़े फाड़ कर घुसना चाहता था।

फिर उसने मेरे होंठों को अपने होंठों में भर लिया और हमने की अपनी जिंदगी की पहली फ्रेंच किस!

वो अहसास शब्दों में बयान कर पाना शायद संभव नहीं है।

हर बार जब हमारी जबां टकराती ... जैसे मेरे मुंह में शहद घुल जाता ... सांसें थोड़ी और

मद्धम हो जाती ... हाथ और पैर के तलवों में सनसनाहट बढ़ती जाती ... कनपटी पर खून हथौड़े की तरह लगता और धड़कनें तेज बहुत तेज होती जाती ।

लगभग दो मिनट बाद हम अलग हुए और उसने धीरे से अपनी स्कर्ट अपने कमर के ऊपर की और ट्राउजर को कच्छी समेत नीचे खिसका दिया.

उसकी चिकनी गांड और उसके नीचे हल्के सुनहरे बालों वाली चूत मेरे सामने थी.

मैंने अपने अन्तर्वासना के अनुभव का उपयोग करते हुए उसके चूतड़ों में सर दे दिया.

मेरी नाक उसकी गांड के आसपास भी और जुबान उसकी चूत पर !

उसने अपने हाथों से अपने चूतड़ों को फैलाया और मैंने अपनी जीभ उसकी चूत में सरका दी.

एक तीखा खारा स्वाद मुझे मेरी जीभ पर महसूस हुआ ... नथुने एक अजीब सी सीलन जैसी गंध से भर गए.

चूत की गंध मुझे असहज कर रही थी पर उसकी हल्की सी सिसकारी ने मुझे ये करते रहने पर मजबूर कर दिया ।

करीब दो मिनट तक चूत में जीभ चलाने के बाद जब मैंने उसके चूतड़ों को भींचना शुरू किया तो वह आगे की ओर सरक गई.

जिससे मेरा सिर उसके चूतड़ों से बाहर निकल आया.

अब तक मेरा लन्ड थोड़ा था मुरझा चुका था और चूंकि मैंने उसकी चूत चाटी थी तो मैंने भी उसे अपना लन्ड चूसने को कहा.

और उसने मुझे निराश नहीं किया ।

हालांकि उसे लन्ड चूसना नहीं आता था लेकिन फिर भी उसने मेरे आधे लन्ड को अपने

मुंह में भर लिया ।

उसके मुंह की गुनगुनी गर्माहट पाकर मेरा लन्ड एक बार फिर से कड़क हो गया.
उसने मेरे आधे लन्ड को ही करीब चार पांच बार होंठों से मसाज दिया.

जब मैंने उसके सिर पर दबाव देकर पूरा लन्ड उसके मुंह में डालना चाहा तो उसे उबकाई
सी आई.

तब मैंने रहने दिया और लन्ड बाहर निकाल लिया ।

हमारे पास समय कम था, अंधेरा घिर आया था और साथ में खेलने वाले हमें ढूँढने लगते.
इसलिए हम सीधा चरमसुख की खोज में निकल पड़े ।

हम दोनों को पता था कि पहली बार में उसे थोड़ा दर्द होगा और हम इसके लिए तैयार थे ।

उसने पीठ के बल लेट कर अपने एक पांव से ट्राउजर निकाल दिया और टांगें फैला दीं.
मैंने अपने लोअर की जेब से पांच रुपए वाली वैसलीन की डिबिया निकाली और उसकी चूत
के उपर थोड़ा सा लगाया.

हालांकि मुझे आज तक नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया था ।

फिर अपने लन्ड को उसकी चूत पर टिका कर मैं उसके ऊपर लेट गया ।

उसने अपना हाथ अंदर डाल कर मेरे लन्ड के सुपारे को अपनी चूत में डाल लिया और एक
हल्की सी आह भरी और मुझे बेतहाशा चूमने लगी ।

फिर मैंने हल्के हल्के धक्के लगा कर अपने लन्ड को करीब आधा उसकी चूत में घुसा दिया.
जब और दबाव बनाने की मैंने कोशिश की तो वह कसमसाने लगी.

मैं समझ गया कि अब सील टूटने की बारी है ।

मैंने उसकी आंखों में देखा और उसने मेरी फिर उसने अपने हाथों का घेरा मेरी पीठ पर बनाया और हौले से बोली- आराम से करना !
और अपने होंठ मेरे होंठों से मिला दिए.

मैंने अपनी कमर को हल्का सा पीछे किया और एक जोरदार धक्का लगाया.
जिससे मेरा लन्ड उसकी चूत में पूरा जा धंसा.

हालांकि दर्द का अहसास मुझे भी हुआ लेकिन शायद उसे ज्यादा दर्द हुआ था क्योंकि मेरी पीठ पर उसकी हाथों की पकड़ इतनी कस गई कि मुझे सांस लेने में दिक्कत सी होने लगी.

मेरा निचला होंठ उसके होंठों में ऐसे दबा कि मुझे तेज दर्द हुआ मानो खून ही निकल आए ।

यहां मेरा अन्तर्वासना पर प्राप्त अनुभव एक बार फिर काम आया और मैंने धक्के नहीं लगाए.

करीब दो मिनट तक हम ऐसे ही पड़े रहे.

और फिर जब उसकी पकड़ सामान्य हुई और उसने वापस से मेरे होंठों को चूसना शुरू किया.

तब मैंने हल्के हल्के धक्के लगाने शुरू किए ।

हालांकि शुरुआत में हर धक्के पर उसकी सिसकारी निकल जा रही थी लेकिन लगभग पांच मिनट में उसकी सिसकारियों के साथ साथ आंखें भी चमकने लगी.

मेरी हालत ऐसी थी कि मानो मेरे लन्ड को किसी ने हाथ में गर्म तेल लगाकर भींच लिया हो.

उसके चुम्बनों ने हौसला बढ़ाया था और अब तक मुझे भी मजा आना शुरू हो गया था.

करीब पंद्रह मिनट तक यह खेल चलता रहा और हमने एक दूसरे के माथे, आंखों, गाल, होंठ और गर्दन पर चुम्बनों की बौछार कर दी थी।

मैं अब चरमसुख की ओर था.

और तभी उसकी टांगें कांपने लगी ... इतनी तेज कि मैंने महसूस किया.

मेरे धक्कों के साथ थरथराहत की लय मिलते हुए और एक बार फिर उसने मुझे जकड़ लिया ... हाथों और पैरों को आपस में जोड़ कर इतनी तेज कि मेरा कमर हिला कर धक्के लगा पाना मुश्किल हो गया.

सिर्फ उसकी थरथराहत थी जो हरकत कर पा रही थी.

और फिर वह शांत हो गई, उसकी पकड़ ढीली हो गई और सांसें गहरी!

उसकी आंखें बंद थी पर थरथराहत रुक रुक कर जारी थी।

मैंने उसे गौर से देखा.

उसके होंठ सुर्ख लाल हो चले थे और उनमें हल्की हल्की सी जुम्बिश थी.

मैंने उसके होंठों को अपने होंठों में भर लिया और चूसने लगा।

चूंकि मैं भी झड़ने वाला था इसलिए मैंने धक्के लगाने जारी रखे.

कुछ दस बाहर धक्कों के बाद उसने आंखें खोली और मेरी तरफ कुछ यूं देखा मानो वह उन धक्कों के लिए तैयार नहीं है।

मैं झड़ने के करीब था और किसी तरीके का रिस्क नहीं लेना चाहता था.

इसलिए मैंने अपने लन्ड को बाहर निकाल लिया और उसे कमर से उठा कर उसके पीछे आ गया मेरा सिर उसके कंधे पर था.

मुझे उस देसी वर्जिन के बालों से उसके शैम्पू की महक आ रही थी.
मैंने अपने लन्ड को जोर जोर से हिलाना शुरू किया.

मैं उसके गालों को चूम रहा था और उसकी चूचियों को भी मसल रहा था.

और वह जैसे ढीली रूई की बोरी की तरह सिर्फ मेरी मर्जी के लिए सब कुछ सह रही हो
क्योंकि उसने कोई भी हरकत नहीं की.

करीब दो मिनट में मेरे लन्ड से गाढ़ा सफेद वीर्य निकालना शुरू हुआ जो पहले तो बहुत
दूर जाकर गिरा और फिर धीरे धीरे शांति से बहने लगा.
जिसे मैंने आखिरी बूंद तक झाड़ दिया और फिर निढाल होकर खेत में ही लेट गया।

मेरी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी और शरीर हल्का हो चला था।

तभी उसने आहिस्ते से अपना सिर मेरे सीने पर रख दिया और मेरे बालों में उंगलियां
फिराते हुए बोली- अब चलो !

मैंने उसकी आंखों में देखा और एक बार फिर हमारे होंठ मिल गए.

करीब दस सेकंड में ही उसने अलग होते हुए कहा- देर हो रही है.
और फिर हमने अपने कपड़े ठीक किए और सावधानी से खेतों से निकल कर बगीचे में आ
छिपे।

हालांकि हमें ढूँढने वाला वहां से जा चुका था और अब अंधेरे के कारण खेल भी बंद होने
वाला था.

लेकिन दोबारा से हमें ढूँढने वो सभी बाकी लोगों के साथ आया.

इस बार मैं उसे पेड़ पर बैठा हुआ मिला और मधु पुआल वाले गड्ढे में।

रात में जब हम सब साथ में पढ़ाई करने बैठे तो एक दूसरे की आंखों में देख कर हल्का हल्का मुस्कुरा रहे थे।

मेरे पैरों की मांसपेशियों में हल्का हल्का खिंचाव मुझे महसूस हो रहा था तो रात को सोने से पहले मैंने मम्मी से कहा- मुझे तेल गर्म करके दे दो।

लेकिन तेल लेकर लगाने के लिए मम्मी नहीं, मधु आई!

दोस्तो, आपकी प्रतिक्रिया ने मुझे हौसला दिया कि मैं फिर से उस वक्त की यादों को दोहरा सकूँ ... तो मैं आगे भी कहानी लिखूँगा.

मैं आप सभी सुधी पाठकों की टिप्पणियां पढ़ता हूँ और कोशिश रहेगी सबका जवाब देने की।

देसी वर्जिन गांव की कहानी को लेकर आपके विचार एवं सुझाव मेरे मेल बॉक्स में भी आमंत्रित हैं.

अपने बहुमूल्य विचार जरूर भेजिए bakrichorsir@gmail.com पर।

आपका देवेश

Other stories you may be interested in

मेरे कुंवारे लंड का उद्घाटन कुंवारी चूत से हुआ

वर्जिन बॉय फर्स्ट Xxx स्टोरी में मैं पढ़ाई के लिए किराये के कमरे में रहता था. माकन मालकिन की भतीजी उनके पास रहने आई तो वह मुझसे घुल मिल गयी और एक दिन उसने सेक्स की पहल की. दोस्तो, कैसे [...]

[Full Story >>>](#)

मौसी मां ने दिया जन्मदिन पर कामुक तोहफा

फर्स्ट फक वर्जिन गर्ल स्टोरी में मैंने अपनी बहन की बेटी जो अब मेरी बेटी भी है, को उसके पहले यौन आनन्द दिलाने का निर्णय किया उसके जन्मदिन पर! यह कहानी सुनें. मेरी यह कहानी सौतेली मां बनी अंतरंग सखी [...]

[Full Story >>>](#)

सोशल मीडिया से मिली आंटी की चुदाई

गर्म आंटी हॉट सेक्स कहानी में मैंने अपने शहर की एक आंटी से सोशल मीडिया से दोस्ती की. धीरे धीरे उसे सेक्स के लिए मनाया और एक दिन उसने मुझे अपने घर बुलाया. मेरा नाम अनिकेत है। मैं कुशीनगर से [...]

[Full Story >>>](#)

काम वाली आंटी की चुदाई

Xxx मेड आंटी चुदाई कहानी में मैंने पड़ोस के घर में काम करने वाली आंटी को चोदा. कुछ दिन के लिए उसने हमारे घर में काम किया था. मैं तभी से उसे चोदना चाहता था. प्रिय पाठको, आप सबको मैं [...]

[Full Story >>>](#)

पति ने मिली भगत से मुझे चुदवाया- 1

गरम माल सेक्स कहानी में मैं एक शादी में गयी पति के साथ. मैं बहुत सेक्सी लड़की हूँ, मुझे लंड की जरूरत रहती है. मेरे पति को भी यह बात पता है. यह कहानी सुनें. दोस्तो मैं जीनी, मेरी उम्र [...]

[Full Story >>>](#)

